नं. १५

धातु पाठः

पत्र: २४

धातुपाठः

१९

२८ पन्ने

नं० १५

व्याकरण क्ला० ६



धातुपाठः पाठक बैजनाथ

पत्र २८

नं० १५ घ
धातुपाठः

१

॥श्रीगणेशायनमः॥ भूसत्तायां॥ उदात्तः परस्मैभाषः॥ एध वृद्धौ। स्पर्ध संघर्षे। गाधृ प्रतिष्ठालिप्सयोर्ग्रंथे च। बा
धृ विलोडने। नाधृ नाथृ याञ्चोपतापैश्वर्याशीःषु। दध धारणे। स्कुदि आप्रवणे। श्विदि श्वैत्ये। वदि अभिवादन
स्तुत्योः। भदि कल्याणे सुखे च। मदि स्तुति मोद मद स्वप्न कांति गतिषु। स्पदि किंचिच्चलने। क्लिदि परिदेवने।
मुद हर्षे। दद दाने। ष्वद स्वर्द आस्वादने। ऊर्द माने क्रीडायां च। कुर्द खुर्द गुर्द गुद क्रीडायामेव। षूद क्षरणे। ह्रा
द अव्यक्ते शब्दे। ह्लादी सुखे च। स्वाद आस्वादने। पर्द कुत्सिते शब्दे। यती प्रयत्ने। युतृ जुतृ भासने। विथृ
वेथृ याचने। श्रथि शैथिल्ये। ग्रथि कौटिल्ये। कत्थ श्लाघायां। एधादय उदात्ता अनुदात्तेत आत्मनेभाषाः
। अत सातत्यगमने। चिती संज्ञाने। च्युतिर् आसेचने। श्चुतिर् क्षरणे। मंथ विलोडने। कुथि पुथि लु

२४

१

हिं ३

थिमथिमंथ हिंसासंक्लेशनयोः। षिध गत्यां। षिधू शास्त्रे मांगल्ये च। खाद भक्षणे। खद स्थैर्ये हिं
सायां च। बद स्थैर्ये। गद व्यक्तायां वाचि। रद विलेखने। णद अव्यक्ते शब्दे। अर्द गतौ याचने च।
नर्द गर्द शब्दे। तर्द सायाम। कर्द कुत्सिते शब्दे। खर्द दंदशूके। अति अदि बंधने। इदि पर
मैश्वर्ये। विदि अवयवे। गडि वदनैकदेशे। णिदि कुत्सायाम। टुनदि समृद्धौ। चदि आह्ला

दी। सोचा

दने [illegible] द्रदि चेष्टायां कदि क्रदि क्लदि आह्वाने रोदने च। क्लिदि परिदेवने। शुंध शुद्धौ
॥ अतादय उदात्ता उदात्तेतः परस्मैभाषाः। शीकृ सेचने। लोकृ दर्शने। [illegible]त
उं[illegible]री[illegible] दर्शने। श्लोकृ संघाते। द्रेकृ ध्रेकृ शब्दो

भिदिइतिपाठांतरं ४

त्साहयोः। रेकृ शंकायां। सेकृ स्रेकृ स्रकि श्रकि श्लकि गत्यर्थाः। शकि शंकायां। अकि लक्षणे। वकि
कौटिल्ये। मकि मंडने। कक लौल्ये। कुक वृक आदाने। चकत्तृप्तौ प्रतीघाते च। ककि वकि श्वकि त्र
कि ढौकृ त्रौकृ ष्वष्क वस्क मस्क टिकृ टीकृ तिकृ तीकृ रघि लघि गत्यर्थाः। लघि भोजननिवृत्तौ च
। अघि वघि मघि गत्याक्षेपे। मघि कैतवे च। राघृ लाघृ द्राघृ ध्राघृ सामर्थ्ये। द्राघृ आयामे च। श्ला
घृ कत्थने। शीकाद्य उदात्ता अनुदात्तेतः आत्मनेभाषाः। फक्क नीचैर्गतौ। तक हसने। तकि कृच्छ्र
जीवने। बुक्क भषणे। कख हसने। ओखृ राखृ लाखृ द्राखृ ध्राखृ शोषणालमर्थयोः। शाखृ
श्लाखृ व्याप्तौ। उख उखि वख वखि मख मखि णख णखि रख रखि लख लखि इख इखि ईखि

खवल्गार गि। लगि अगि वगि मगि तगि त्वगि श्रगि श्लगि इगि रिगि लिगि गत्यर्थाः। त्वगि कंपने युगि जुगि
बुगि वर्जने। घघ हसने। मघि मंडने। शिघि आघ्राणे। फकादय उदात्ता उदात्तेत परस्मैभाषाः। वर्च
दीप्तौ। षच सेचने सेवने च। लोचृ दर्शने। शच व्यक्तायां वाचि। श्वच श्वचि गतौ। कच बंधने। कचि काचि दीप्तिबंधनयोः। मच मुचि कल्कने। मचि धारणोच्छ्रायपूजनेषु। पचि व्यक्तीकरणे। ष्टुच प्रसादे
। ऋज गतिस्थानार्जनोपार्जनेषु। ऋजि भृजी भर्जने। एजृ भ्रेजृ भ्राजृ दीप्तौ। ईज गतिकुत्सनयोः
। वर्चादय उदात्ता अनुदात्तेत आत्मनेभाषाः। शुच शोके। कुच शब्दे तारे। कुंच क्रुंच कौटि
ल्याल्पीभावयोः। लुंच अपनये। अंचु गतिपूजनयोः वंचु चंचु तंचु त्वंचु म्रुंचु म्लुंचु मुचु म्लुचु

३

गत्यर्थाः। युचु म्लुचु कुजु खुजु स्तेयकरणे। ग्लुंचु षस्ज गतौ। गुजि अव्यक्ते शब्दे। अर्च पूजायां। म्लेछ
छ अव्यक्ते शब्दे। लछ लाछि लक्षणे। वाछि इच्छायाम्। आछि आयामे। ह्रीछ लज्जायां। हुर्छी
कौटिल्ये। मुर्छा मोहसमुच्छ्राययोः। स्फुर्छा विस्तृतौ। युछ प्रमादे। उछि उंछे। उर्ज षर्ज अर्जने
। गर्ज शब्दे। तर्ज भर्त्सने। कर्ज व्यथने। खर्ज पूजने च। अज गतिक्षेपणयोः। तेज पालने। खज मंथे
खज गतिवैकल्ये। एजृ कंपने। टुओस्फूर्जा वज्रनिर्घोषे। क्षि क्षये। क्षीज अव्यक्ते शब्दे। लज ल

च

जि भर्त्सने। जज जजि युद्धे। तुज हिंसायां। तुजि पालने [illegible]। गज गजि गृज गृजि मुज मुजि शब्दा
र्थाः। गज मद[illegible]च। वज व्रज गतौ। ऋचादय उदात्ता उदात्तेतः क्षिवर्जिताः परस्मैभाषाः। अट्ट अ

लज लजि भर्त्सने २

२२१७

तिक्रमणहिंसयोः।वेष्ट वेष्टने।चेष्ट चेष्ट[illegible]यां।गोष्ट लोष्ट संघाते।घट्ट चलने।स्फुट विकसने।अ
ठि गतौ।वठि एकचर्यायां।मठि कठि शोके।मुठि पालने॥हेठ विबाधायां।एठ च।हिडि गत्यनादरयोः
।हुडि संघाते।कुडि दाहे।वडि विभाजने।मडि च।भडि परिभाषणे।पिडि संघाते।मुडि मार्जने

कोपे

।तुडि तोडने।हुडि वरणे।चडि चैत्यके।शडि रुजायां संघाते च।तडि ताडने।पडि गतौ।कडि
मदे।खडि मंथे।हेडृ होडृ अनादरे।बाडृ आप्लाव्ये।द्राडृ ध्राडृ विशरणे।शाडृ श्लाघायां।
अहादय उदात्ता अनुदात्तेत आत्मनेभाषाः।शौटृ गर्वे।यौटृ बंधे।म्लेटृ म्रेडृ उन्मादे।कटे
वर्षावरणयोः।चटे स्येके।अट पट गतौ।रट परिभाषणे।लट बाल्ये।शट रुजा विशरण ग

४

सवृ साद नेषु। वट वेष्टने। किठ रिवट त्रासे। शिट षिट अनादरे। जट झट संघाते। भट भृतौ। तट उ
छ्राये। खट काङ्क्षायां। णट नृत्तौ। पिट शब्द संघातयोः। हट दीप्तौ। षट अवयवे। लुट विलोडने। चि
ट परप्रेष्ये। चिट शब्दे॥ बिट आक्रोशे। हिठ स्येके। केटी इट किट गतौ। मडि भूषायां। कुडि वैकल्ये। मुट प्र
मर्दने। त्रुडि अल्पीभावे। मुडि खंडने। पुडि चैत्यके। रुटि लुटि स्तेये। जीवने। स्फुटिर् विशरणे। पठ व्यक्ता
यां वाचि। वठ स्थौल्ये। मठ मद निवासयोः। कठ कृच्छ्रे। रठ परिभाषणे। हठ प्लुति शठत्वयोः। रुठ लुठ उठ उ
पघाते। उठ स्येके। पिठ हिंसा संक्लेशनयोः। शठ कैतवे च। शुठ प्रतिघाते। कुठि च। लुठि आलस्ये
प्रतिघाते च। शुठि शोषणे। रुठि लुठि गतौ। चुडु भावकरणे। अडु अभियोगे। कडु कार्श्ये। क्रीडृ वि

१८

स्फुटीति केचित् ४

४

४ रुठि लुठि इड्सेके। रुडि लुडि स्तेये। [illegible] ४

जीवने ३

मठ मद निवासयोः। २ ४ ४

३

हारे।तुडृ तोडने।हुडृ कुडृ हौडृ गतौ।रौडृ अनादरे।रोडृ लोडृ उन्मादे।अड उद्यमने।[illegible]
[illegible]।लडृ विलासे।कडु मदे।गडि वदनैकदेशे।शौटादयउदात्ता उदात्तेतः परस्मैभाषाः।तिपृ तेपृ ष्टिपृ
ष्टेपृ क्षरणार्थाः।तेपृ कंपने।ग्लेपृ दैन्ये।टुवेपृ कंपने।केपृ गेपृ ग्लेपृ च।मेपृ रेपृ लेपृ गतौ।त्रपूष् ल
ज्जायां।कपि चलने।रबि लबि अबि शब्दे।लबि अवस्रंसने।कबृ वर्णे।क्लीबृ अधार्ष्ट्ये।क्षी
बृ मदे।शीभृ कत्थने।चीभृ च।रेभृ शब्दे।ष्टभि स्कभि प्रतिबंधे।जभि जृभि गात्रविनामे।शल्भ
कत्थने।वल्भ भोजने।[illegible] धार्ष्ट्ये।प्रंभु प्रमादे।ष्टभु स्तंभे।तिपादयउदात्ता अनुदात्तेतस्तिपि
वर्जमात्मनेभाषाः।गुपू रक्षणे।धूप संतापे।जप जल्प व्यक्तायां वाचि।जप मानसे च।चप सान्त्व

२४

ज

बंभ

नेः। षप समवाये। रपलपव्यक्तायां वाचि। चुप मंदायां गतौ। तुप तुंप त्रुप त्रुंप तुफ तुंफ त्रुफ त्रुंफ हिंसार्थाः। पर्प रफ रंफ अर्ब पर्ब लर्ब बर्ब कर्ब खर्ब गर्ब शर्ब षर्ब चर्ब गतौ। कुबि आच्छादने। लुबि तुबि अर्दने। चुबि वक्त्रसंयोगे। सृभु सृंभु हिंसार्थौ। षिभु षिंभु इत्येके। शुभ शुंभ भाषणे हिंसायां च। गुपादय उदात्ता उदात्तेतः परस्मैभाषाः। घिणि घुणि घृणि ग्रहणे। घुण घूर्ण भ्रमणे। पण व्यवहारे स्तुतौ च। पन च। भाम क्रोधे। क्षमूष् सहने। कमु कांतौ। घिण्यादय उदात्ता अनुदात्तेतः आत्मनेभाषाः। अण रण वण भण मण कण क्वण व्रण भ्रण ध्वण शब्दार्थाः। ओणृ अपनयने। शोणृ वर्णगत्योः। श्रोणृ संघाते च। श्लोणृ च। पैणृ गतिप्रेरणश्लेषणेषु। ध्रण शब्दे। कनी दीप्तिकांतिगतिषु। ष्टन

धा० १
भा० २

वृनु शब्दे। वृन षण संभक्तौ। अम गत्यादिषु। द्रम हम्म मीमृ गतौ। चमु छमु जमु झमु अदने। क्रमु पादविक्षेपे। अष्टा उदात्ता उदात्तेतः परस्मैभाषाः। अय वय पय मय चय तय णय गतौ। दय दानगतिरक्षणहिंसादानेषु। रय गतौ। ऊयी तंतुसंताने। पूयी विशरणे दुर्गंधे च। क्नूयी शब्दे उंदे च। क्ष्मायी विधूनने। स्फायी ओप्यायी वृद्धौ। तायृ संतानपालनयोः। शल चलने संवरणयोः। वल वल्ल संवरणे संचरणे च। मल मल्ल धारणे। भल भल्ल परिभाषणहिंसादानेषु। कल शब्दसंख्यानयोः। कल्ल अव्यक्ते शब्दे। तेवृ देवृ देवने। षेवृ गेवृ ग्लेवृ पेवृ मेवृ म्लेवृ सेवने। खेवृ केवृ ह्लेवृ रेवृ प्लवगतौ। अयादय उदात्ता अनुदात्तेत आत्मनेभाषाः। मव्य बंधने। सूर्क्ष्य ईर्क्ष्य ईर्ष्य ईर्ष्यार्थाः। हय गतौ। शुच्य च्युच्य अभिषवे।

६

हर्यगतिकांत्योः। अल भूषणपर्याप्तिवारणेषु। ञिफला विशरणे। मील श्मील स्मील क्ष्मील निमेषणे। पील प्रतिष्टंभे। णील वर्णे। शील समाधौ। कील बंधने। कूल आवरणे। शूल रुजायां संघाते च। तूल निष्कर्षे। पूल संघाते। मूल प्रतिष्ठायां। फल निष्पत्तौ। चुल्ल भावकरणे। फुल्ल विकसने। चिल्ल शैथिल्ये भावकरणे च। तिल गतौ। तिल्ल स्नेहे। वेल्ल चेल्ल केल्ल खेल्ल क्ष्वेल्ल वेल्ल चलने। पेल्ल फेल्ल शेल्ल गतौ। स्खल संचलने। खल संचये। गल अदने। षल गतौ। दल विशरणे। श्वल श्वल्ल आशुगमने। खोल्ल खोर्ऋ गतिप्रतिघाते। धोर्ऋ गतिचातुर्ये। त्सर छद्मगतौ। क्मर हूर्छने। अभ्र वभ्र मभ्र चर गत्यर्थाः। ष्ठिवु निरसने। जि जये। जीव प्राणधारणे। पीव मीव तीव णीव स्थौल्ये। क्षीवु

६

दुर्वी

क्षेवु निरसने। उर्वी तुर्वी थुर्वी धुर्वी हिंसार्थाः। गुर्वी उद्यमने। मुर्वी बंधने। पुर्व पर्व मर्व पूरणे। चर्व अदने। भर्व हिंसायां। कर्व खर्व गर्व दर्पे। अर्व शर्व षर्व हिंसायां। इवि व्याप्तौ। पिवि मिवि णिवि सेचने। हिवि दिवि धिवि जिवि प्रीणनार्थाः। रिवि रवि धवि गत्यर्थाः। कृवि हिंसाकरणयोश्च। मव बंधने। अव रक्षणगतिकांतिप्रीतितृप्त्यवगमप्रवेशश्रवणस्वाम्यर्थयाचनक्रियेच्छादीप्त्यवाप्त्यालिंगनहिंसादानभाववृद्धिषु। मव्यादय उदात्ता उदात्तेतो जयतिवर्जं परस्मैभाषाः। धावु गतिशुद्ध्योः। उदात्तस्वरिते दुभयतोभाषः। धुक्ष धिक्ष संदीपनक्लेशनजीवनेषु। वृक्ष वरणे। शिक्ष विद्योपादाने तु। भिक्ष याच्ञायामलाभे लाभे च। क्लेश अव्यक्तायां वाचि। दक्ष वृद्धौ शीघ्रार्थे च। दीक्ष मौं[illegible]

ज्योपनयननियमव्रतादेशेषु।ईक्षदर्शने।ईषगतिहिंसादानेषु।भाषव्यक्तायांवाचि॥वर्षस्नेह
ने।गेषृअन्विच्छायाम।येषृप्रयत्ने।म्लेषृइत्येके।जेषृणेषृएषृप्रेषृगतौ।रेषृहेषृअव्यक्तेशब्दे।
कासृशब्दकुत्सायाम्।भासृदीप्तौ।णासृरासृशब्दे।णसकौटिल्ये।भ्यसभये।आङःशसिइ
च्छायां।ग्रसुग्लसुअदने।ईहचेष्टायां।बहिमहिवृद्धौ।अहिगतौ।गर्हगल्हकुत्सायाम।बर्ह
बल्हप्राधान्ये।बर्हवल्हसाच्छादनेषु।प्लिहगतौ।वेहृजेहृवाहृप्रयत्ने।द्राहृनिद्राक्षये।काशृ
दीप्तौ।ऊहवितर्के।गाहूविलोडने।गृहूग्रहणे।ग्लहच।घुषिकांतिकरणे।घुक्षादयउदात्ता
अनुदात्तेतआत्मनेभाषाः।घुषिंविशब्दार्थाः।अक्षूव्याप्तौ।तक्षूत्वक्षूतनूकरणे।उक्षसेच

८

परिभाषणहिं

ह्रेषृ

भा

नैं। णिक्ष चुंबने। तृक्ष स्तृक्ष णक्ष गतौ। वक्ष रोषे संघात इत्येके। मृक्ष संघाते। मक्ष इत्यप्येके। तक्ष त्वच
ने। पक्ष इत्येके। सूर्क्ष्य आदरे। काक्षि वाक्षि माक्षि कांक्षायां। द्राक्षि ध्राक्षि ध्वाक्षि घोरवाशिते च। चूष पा
ने। तूष तुष्टौ। पूष वृद्धौ। मूष स्तेये। लूष रूष भूषायां। शूष प्रसवे। [illegible]ष हिंसायां। जूष च। भूष अलंका
रे। ऊष रुजायां। ईष उंछे। कष खष शिष जष झष शष वष मष रुष रिष हिंसार्थाः। भष भर्त्सने। उ
ष दाहे। जिषु विषु मिषु सेचने। पुष पुष्टौ। श्रिषु श्लिषु प्रुषु प्लुषु दाहे। पृषु वृषु मृषु सेचने। षु स
हने च। इतरे हिंसासंक्लेशयोश्च। घृषु संघर्षणे। हृषु अलीके। तुस ह्रस ह्लस रस शब्दे। ल
स क्रीडनयोः। घस्लृ अदने। जर्ज चर्च्च झर्झ परिभाषणहिंसातर्जनेषु। पिस पेस गतौ। हसे

रक्षवाक्षि
परिशृं
श्लेषण१

छ
पू
म

हसने।णिश्चासमाधौ।मिश्चामश्चशब्देरोषकृते।श्रावगतौ।श्राश्राप्लुतगतौ।श्रास्कहिंसायां।श्रंस्कस्कतौ।वृह
परिकल्कने।महपूजायाम्।रहत्यागे।रहिगतौ।दहहहिवृहवृहिवृद्धौ।तुहिर्दुहिर्उहिर्अर्दने
।अर्हपूजायाम्।घुषिरादयउदात्ताउदात्तेतःपरस्मैभाषाः।द्युतदीप्तौ।श्वितावर्णे।ञिमिदास्ने
हने।ञिष्विदास्नेहनमोचनयोः।रुचदीप्ताविभिप्रीतौच।घुटपरिवर्त्तने।रुटलुटप्रतिघाते।शुभ
दीप्तौ।क्षुभसंचलने।णभतुभहिंसायां।स्रंसुध्वंसुभ्रंसुअवस्रंसने।स्रंभुविश्वासे।वृतु
वर्त्तने।वृधुवृद्धौ।शृधुशब्दकुत्सायां।स्यंदूप्रस्रवणे।कृपूसामर्थ्ये।घुतादयउदात्ताअनुदा
त्तेतआत्मनेभाषाः।वृत।घटचेष्टायां।व्यथभयसंचलनयोः।प्रथप्रख्याने।प्रसविस्तारे।म्रद

मर्दने। स्खदस्खदने। क्ष जिगतिदामयोः। दक्षगतिहिंसनयोः। क्रपकृपायांगतौ। कदिक्रदिक्लदिवै
क्लव्ये॥ ञित्वरासंभ्रमे। घटादयः षितः। उदात्ताश्च अनुदात्तेत आत्मनेभाषाः। ज्वररोगे। गडसेचने
हेडवेष्टने। वटभटपरिभाषणे। णटनृत्तौ। ष्टकप्रतिघाते। चकतृप्तौ। कखेहसने। रगेशंकायां। ल
गसंगे। ह्रगेह्लगेषगेष्ठगेसंवरणे। कगेनोच्यते। अकअगकुटिलायांगतौ। कणरणगतौ। चण
शणश्रणदाने। श्नथक्नथक्लथक्लथहिंसार्थाः। चनच। वनुचनोच्यते। ज्वलदीप्तौ। ह्वलह्मल
चलने। स्मृआध्याने। दृभये। श्रापाके। मारणतोषणनिशामनेषु ज्ञा। कंपनेचलिः। छदिरूर्ज
ने। जिह्लोन्मथनेलडिः। मेदीहर्षग्लेपनयोः। ध्वनशब्दे। दलिवलिस्खलिरणिध्वनित्रपिक्षयश्च

दृंभये २

९

ज्वल

घटादयो मितः। जनीजृष्क्नसुरंजोमंताश्च। ज्वलह्वलह्मलनमामनुपसर्गाद्वा। ग्लास्नावनुवमांच। नक्
म्यमिचमां। शमोदर्शने। यमोपरिवेषणे। स्खदिरवपरिभ्यांच। फणगतौ। इति॥ ज्वरादय उदात्ता
उदात्तेतः परस्मैभाषाः॥ राजृदीप्तौ। उदात्तस्वरितेदुभयतोभाषः। टुभ्राजृ टुभ्राशृ टुभ्लाशृ दीप्तौ
। उदात्ता अनुदात्तेत आत्मनेभाषाः। स्यमुस्वनध्वनशब्दे। षम ष्टम अवैक्लव्ये। ज्वलदीप्तौ। चलकंप
ने। जलघातने। टलट्वलवैक्लव्ये। ष्ठलस्थाने। हलविलेखने। णलगंधने। पलगतौ। बलप्राणनेधा
न्यावरोधेच। पुलमहत्वे। कुलसंस्त्याने बंधुषुच। शलहुलपत्लृगतौ। हुलहिंसासंवरणयोश्च। क्व
थनिष्पाके। पथेगतौ। मथेविलोडने। टुवमउद्गिरणे। भ्रमुचलने। क्षरसंचलने। स्यमादय उदात्ता उ

अ

९

उदात्तेत:

२१

दात्तेत्परस्मैभाषाः॥ षह मर्षणे। उदात्तो अनुदात्तेदात्मनेपदी। रमु क्रीडायाम्। अनुदात्तोनुदात्तेदात्म
नेपदी। षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु। शद्लृ शातने। क्रुश आह्वाने रोदने च। षदाद्यस्त्रयोनुदात्ताः
परस्मैभाषाः। कुच संपर्चनकौटिल्यप्रतिष्टंभविलेखनेषु। बुध अवगमने। रुह बीजजन्मनि प्रादु
र्भावे। कस गतौ। कुचादय उदात्ताः उदात्तेतो रुहिस्त्वनुदात्तः परस्मैभाषाः। वृत्। हिक्क अव्यक्ते श
ब्दे। अंचु गतौ याचने च। टुयाचृ याच्ञायाम्। रेटृ परिभाषणे। चते चदे याचने। प्रोथृ पर्याप्तौ। मिदृ मेदृ मे
धाहिंसनयोः। मेधृ संगमे च। णिदृ णेदृ कुत्सासन्निकर्षयोः। शृधु मृधु उंदने। बुधिर् बोधने। उबुंदिर् नि
शामने। वेणृ गतिज्ञानचिंतानिशामनवादित्रग्रहणेषु। खनु अवदारणे। चीवृ आदानसंवर

६२

प

न

१०

लयोः। चायृ पूजानिशामनयोः। व्यय गतौ। दाशृ दाने। भेषृ भये। भ्रेषृ गतौ। भ्लेषृ इत्यपि। असगतिदीप्त्या
दानेषु। अष इत्येके। स्पश बाधनस्पर्शनयोः। लष कांतौ। चष भक्षणे। छष हिंसायां। झष आदानसंवरण
योः। भ्लक्ष अदने। दासृ दाने। माहृ माने। गुहू संवरणे। हिक्कादय उदात्ता स्वरितेत उभयतो भाषाः। श्रि
ञ् सेवायां। उदात्त उभयतो भाषः। भृञ् भरणे। हृञ् हरणे। धृञ् धारणे। णीञ् प्रापणे। भृञादयश्च त्वा
र अनुदात्ता उभयतो भाषाः। धेट् पाने। ग्लै म्लै हर्षक्षये। म्लै गात्रविनामे। द्यै न्यक्करणे। द्रै स्वप्ने। ध्रै हसौ। ध्यै
चिंतायां। रै शब्दे। स्त्यै ष्ट्यै शब्दसंघातयोः। खै खदने। क्षै जै षै क्षये। कै गै शब्दे। शै श्रै पाके। पै ओवै शो
षणे। ष्टै वेष्टने। ष्णै वेष्ट इत्येके। दैप् शोधने। पा पाने। घ्रा गंधोपादाने। ध्मा शब्दाग्निसंयोगयोः। ष्ठा ग

१०

हूकौटिल्ये

य

तिनिवृत्तौ। श्मा अभ्यासे। दाण् दाने। स्वृ शब्दोपतापयोः। स्मृ चिंतायां। ह्वृ संवरणे। स्वृ गतौ। ऋ ग
तिप्रापणयोः। घृ सेचने। ह्वृ कौटिल्ये। स्कृ गतौ। षुप्रसवैश्वर्ययोः। श्रु श्रवणे। ध्रु स्थैर्ये। दु द्रु गतौ। जि
ज्रि अभिभवे। धेट्पानादयो अनुदात्ता परस्मैभाषाः। ष्मिङ् ईषद्धसने। गुङ् अव्यक्तशब्दे। गाङ् गतौ। कु
ङ् घुङ् उङ् शब्दे। च्युङ् ज्युङ् प्रुङ् प्लुङ् गतौ। क्रुङ् इत्येके। रुङ् गतिरेषणयोः। धृङ् अवध्वंस
ने। मेङ् प्रणिदाने। देङ् रक्षणे। श्यैङ् गतौ। प्यैङ् वृद्धौ। त्रैङ् पालने। ष्मिङ् प्रभृतयः एदंता अनु
दात्ता आत्मनेभाषाः। पूङ् पवने। मूङ् बंधने। डीङ् विहायसा गतौ॥ पूङ् आदयस्त्रय एते उदात्ता आ
त्मनेभाषाः॥ तृ प्लवनतरणयोः। उदात्त परस्मैभाषः। गुप गोपने। तिज निशाने। मान पूजायां। बध

कै

२२

बंधने। गुपदय श्चत्वार एते अनुदात्तेत आत्मनेभाषाः। रभ राभस्ये। डुलभ [illegible] प्राप्तौ। ष्वंज परिष्वंगे

। हद पुरीषोत्सर्गे। रभादयश्चत्वारो ऽनुदात्तेत आत्मनेभाषाः। ञिष्विदा अव्यक्ते शब्दे। उदात्त

उदात्तेत्परस्मैपदी॥ स्कंदिर् गतिशोषणयोः। यभ [illegible] मैथुने। णम प्रह्वत्वे। गम्लृ सृप्लृ गतौ

। यम उपरमे। तप संतापे। त्यज हानौ॥ षंज संगे। दृशिर् प्रेक्षणे। दंश दशने। कृष विलेखने। द

ह भस्मीकरणे। मिह सेचने। स्कंदादय एतदंता अनुदात्ता उदात्तेतः परस्मैभाषाः। कित निवासे

रोगापनयने च। उदात्तेत्परस्मैपदी। दान खंडने। शान तेजने। स्वरितेतावुभयतो भाषौ। डु पचष् पा

के। षच समवाये। भज सेवायां। रंज रागे। शप आक्रोशे। त्विषदीप्तौ। यज देवपूजा संगतिकर

२२

णदानेषु। डुवपू बीजसंताने। वह प्रापणे। पचत्यादयोऽनुदात्ताः स्वरितेतः। मचतिचानिस्तूदा
त्तः उभयतोभाषाः॥ वस निवासे। अनुदात्तेत्परस्मैपदी। वेञ् तंतुसंताने। व्येञ् संवरणे। ह्वेञ् स्प
र्धायां शब्दे च। वेञादयस्त्रयोऽनुदात्ता उभयतोभाषाः। वद व्यक्तायां वाचि। टुओश्वि गतिवृ
द्ध्योः॥ वृत्॥ अयं वदतिश्वो दात्तौ परस्मैभाषौ॥ ॥ इति निरुद्धाविकरणभूवादयः॥ ॥ अ
द भक्षणे॥ हन हिंसागत्योः। अदिहनी अनुदात्तावुदात्तेतौ परस्मैपदिनौ॥ द्विष अप्रीतौ। दु
ह प्रपूरणे। दिह उपचये। लिह आस्वादने। द्विषादयोऽनुदात्ताः स्वरितेत उभयतोभाषाः। चक्षिङ्
व्यक्तायां वाचि। अनुदात्तोऽनुदात्तेदात्मनेपदी। ईङ्। ईर गतौ कंपने च। ईड स्तुतौ। ईश ऐश्व

१२

यी। आस उपवेशने। आङः शासु इच्छायां। वस आच्छादने। कसि गतिशासनयोः। कस इत्येके।
कशा गतिशासनयोः। णिसि चुंबने। णिजि शुद्धौ। त्रिजि अव्यक्ते शब्दे। पिजि वर्णे। ष्टजी त्येके। [illegible] वृजी व
र्जने। पृची संपर्चने। ईराद्य उदात्ता अनुदात्तेत आत्मनेभाषाः। षूङ् प्राणिगर्भविमोचने। शीङ् स्वप्ने। आ
त्मनेभाषानुदात्तौ। यु मिश्रणे। रु शब्दे। णु स्तुतौ। टुक्षु शब्दे। क्ष्णु तेजने। स्नु प्रस्रवणे। यु प्रभृतय उदात्ताः
परस्मैभाषाः। ऊर्णुञ् आच्छादने। उदात्त उभयतोभाषः। द्यु अभिगमने। षु प्रसवैश्वर्ययोः। कु शब्दे। ष्टुञ् स्तु
तौ। द्यौ स्वादयोनुदात्ताः परस्मैभाषाः। स्तौतिरुभयतोभाषः। ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि। उदात्त उभयतोभाषः।
इण् गतौ। इङ् अध्ययने। इक् स्मरणे। वी गतिप्रजनकांत्यसनखादनेषु। या प्रापणे। वा गतिगंधनयोः। भा दी

मिश्रणे

धा१२

१२

१ श्रा पाके· द्रा कुत्सायां गतौ च· प्सा भक्षणे· पा रक्षणे· रा दाने· ला आदाने· दाप् लवने· ख्या प्रकथने· प्रा पूरणे· १

मौ ष्णा शौचे। मा माने। वच परिभाषणे। इण्प्रभृतयोनुदात्ताः परस्मैभाषाः। इङ् त्वात्मनेपदी। विद ज्ञाने। अस भुवि। मृजू शुद्धौ। रुदिर् अश्रुविमोचने। विदादयोउदात्ताउदात्तेतः परस्मैभाषाः। ञिष्वप् शये। उदात्तेदनुदात्तः परस्मैपदी। श्वस प्राणने। अन च। जक्ष भक्षहसनयोः। जागृ निद्राक्षये। दरिद्रा दुर्गतौ। चकासृ दीप्तौ। शासु अनुशिष्टौ। श्वसादय उदात्ता उदात्तेतः परस्मैभाषाः। दीधीङ् दीप्तिदेवनयोः। वेवीङ् वेदनातुल्ये। उदात्तावात्मनेभाषौ। षस सस्ति स्वप्ने। वश कान्तौ। षसादय उदात्ता उदात्तेतः परस्मैभाषाः। चर्करीतं च। ह्नुङ् अपनयने। अनुदात्त आत्मनेभाषो॥ ॥ इति लुग्विकरणा अदादयः॥ ॥ हु दानादनयोः। ञिभी भये। ह्री लज्जायां। जुहोत्यादयोनुदात्ताः परस्मैभाषाः। पॄ पालनपूरणयोः। उदात्तः परस्मैभाषः। डुभृञ् धारणपो

षयोः। अनुदात्त उभयतोभाषः। माङ् माने शब्दे च। अनुदात्त आत्मनेपदी। ओहाङ् गतौ। अनुदात्त आत्मनेपदी।
। ओहाक् त्यागे। अनुदात्तः परस्मैपदी। डुदाञ् दाने। उभयतो भाषोनुदात्तः। डुधाञ् धारधारणपोषणयोः।
अनुदात्त उभयतो भाषः। णिजिर् शौचपोषणयोः। विजिर् पृथग्भावे। विष्लृ व्याप्तौ। णिजादयस्त्रयः स्वरितेतोनुदात्ता उभ
यतोभाषाः। घृ क्षरणदीप्त्योः। हृ प्रसह्यकरणे। सृ गतौ। घृप्रभृतयोनुदात्ताः परस्मैभाषाः। भस भर्त्सनदीप्त्योः
। उदात्त उदात्तेत्परस्मैपदी। कि ज्ञाने। अनुदात्ताः परस्मैभाषाः। तुर त्वरणे। धिष शब्दे। धन धान्ये। जन जनने। तु
रादय उदात्ता उदात्तेतः परस्मैभाषाः। गा स्तुतौ। अनुदात्त परस्मैभाषः। छंदसि वृत्त॥ ॥ इति श्लुविकरणा
जुहोत्यादयः॥ ॥ दिवु क्रीडाविजिगीषाव्यवहारद्युतिस्तुतिमोदमदस्वप्नकांतिगतिषु। षिवु तंतुसंताने। स्रि

ब्युस अदने। ल्पस निरसने। क्नस ह्वरणदीप्त्योः। क्नथ दाहे। ल्पुष चान्तौ गात्रविक्षेपे। त्रसी उद्वेगे। कुथ पूतीभावे। पुथ हिंसायां। गुध परिवेष्टने। क्षिप प्रेरणे। पुष्प विकसने। तिम ष्टिम ष्टीम आर्द्रीभावे। व्रीड चोदने लज्जायां। इष गतौ। षह षुह चक्यर्थे। जृष् झृष् वयोहानौ। दिवादय उदात्ता उदात्तेतः क्षिपिवर्जिताः परस्मैभाषाः। षूङ् प्राणिप्रसवे। दूङ् परितापे। आत्मनेभाषावुदात्तौ। दीङ् क्षये। डीङ् विहायसा गतौ। धीङ् आधारे। मीङ् हिंसायां। रीङ् स्रवणे। लीङ् श्लेषणे। व्रीङ् वरणे त्यर्थे। वृत्॥ स्वादय ओदितः॥ पीङ् पाने। माङ् माने। ईङ् गतौ। प्रीङ् प्रीणने। दीङादय आत्मनेपदिनो डीङ्वर्जमनुदात्ताः। शो तनूकरणे। छो छेदने। षो अन्तकर्मणि। दो अवखण्डने। श्यतिप्रभृतयोऽनुदात्ताः परस्मैभाषाः। जनी प्रादुर्भावे। दीपी दीप्तौ। पूरी आप्यायने। तूरी गतित्वरणहिंसनयोः।

च

४ खिद्दैन्ये
ति २

धूरीगूरी हिंसागत्योः। घूरीजूरी हिंसावयोहान्योः। ञ्जूरी हिंसास्तंभनयोः। चूरी दाहे। तप ऐश्वर्ये वा। वृतु वरणे। क्लिश उपतापे। काश्रृ दीप्तौ। वाश्रृ शब्दे। जन्यादय उदात्ता अनुदात्तेतस्तपिवर्जमात्मनेभाषाः। मृष तितिक्षायां। ईशुचिर् पूतिभावे। उदात्तौ स्वरितेतावुभयतोभाषौ। णह बंधने। रंज रागे। शप आक्रोशे। णहादयस्त्रयोनुदात्ताः स्वरितेत उभयतोभाषाः। पद गतौ। विद सत्तायां। बुध अवगमने। युध संप्रहारे। अनो रुध कामे। अण प्राणने। मन ज्ञाने। युज समाधौ। सृज विसर्गे। लिश अल्पीभावे। पदादयोनुदात्ता अनुदात्तेतो णपनिवर्जमात्मनेभाषाः। एधोकर्मकाद्बुद्धावेव च। व्यध ताडने। पुष पुष्टौ। शुष शोषणे। तुष प्रीतौ। दुष वैकृत्ये। श्लिष आलिंगने। शक विभाषितो मर्षणे। ष्विदा गात्रप्रक्षरणे। क्रुध कोपे। क्षुध बुभु

पस्तपधो नुदात्ताः स्वरितेत ४

धं

४ यसुप्रयत्ने· जसुमोक्षणे· तसुउपक्षये· दसुच· वसुस्तंभे· व्युषविभागे· व्युसीत्यन्ये· प्लुषदाहे· विसप्रेरणे· कुससंश्लेषणे· ४

क्षायां।क्षुधञ्शौचे।षिधुसंराधौ।राधादयोनुदात्ताउदात्तेतः परस्मैभाषाः।।रधहिंसासंराध्योः।णशअदर्शने।तृपप्री
णने।हृपहर्षणमोहनयोः।द्रुहजिघांसायां।मुहवैचित्ये।ष्णुहउद्गिरणे।ष्णिहप्रीतौ।वृत।रधादयउदात्ताउदात्ते
तःपरस्मैभाषाः।शमुउपशमने।तमुकांक्षायां।दमुउपशमने।श्रमुतपसिखेदेच।भ्रमुअनवस्थाने।क्षमूसहने
।क्लमुग्लानौ।मदीहर्षे।अस्कक्षेपणे।वुसउत्सर्गे।मुसखंडने।मसीपरिमाणे।लुटविलोडने।उचसमवाये।
भृशुभ्रंशुअधःपतने।।वृशवरणे।कृशतनूकरणे।ञितृषपिपासायां।हृषतुष्टौ।रुषरोषे।रिषहिंसायांच।डि
पक्षेपे।कुपक्रोधे।गुपव्याकुलत्वे।युपरुपलुपविमोहने।लुभगार्ध्ये।[illegible]भंसेचलने।णभतुभहिंसायां।क्लिदूआ
र्द्रीभावे।ञिमिदास्नेहने।ञिक्ष्विदास्नेहनमोचनयोः।ऋधुवृद्धौ।गृधुअभिकांक्षायां।वृत।शमादयउदात्ता

२४

उदात्तेतः परस्मैभाषाः॥ ॥इतिश्यन्विकरणदिवादयः॥ ॥षुञ्अभिषवे।षिञ्बंधने।शिञ्निशाने।डुमि
ञ्प्रक्षेपणे।चिञ्चयने।स्तृञ्आच्छादने।कृञ्हिंसायां।धुञ्कंपने।स्वादयोउभयतोभाषाः।वृञ्वर्जमनु
दात्ताः।दुदुउपतापे।हिगतौवृद्धौच।पृप्रीतौ।स्पृप्रीतिपालनयोःस्मृइत्येके।आप्लृव्याप्तौ।शक्लृशक्तौ।राध
साधसंसिद्धौ।टुनोॅप्रभृतयोनुदात्ताःपरस्मैभाषाः।अशूव्याप्तौसंघातेच।ष्टिघआस्कंदने।अशिःष्टिघीउदा
त्तावनुदात्तावात्मनेभाषौ।तिकगतिच।षघहिंसायां।ञिधृषाप्रागल्भ्ये।दम्भुदंभे।ऋधुवृद्धौ।छंदसि।अह
व्याप्तौ।दघघातनेपालनेच।चमुभक्षणे।रिक्षिचिरिजिरिदाशदृहिंसायां।वृत्।तिकादयउदात्ताउदात्तेतः
परस्मैभाषाः॥ ॥इतिश्नुविकरणाःस्वादयः॥ ॥तुदव्यथने।णुदप्रेरणे।दिशअतिसर्जने।भ्रस्जपाके।क्षि

ति

५८

पप्रेरणे। कृषविलेखने। तुदादयो नुदात्तास्वरितेतउभयतोभाषाः। ऋषीगतौ। उदात्तउदात्तेत्परस्मैप
दी। जुषीप्रीतिसेवनयोः। ओविजीभयचलनयोः। ओलजीओलस्जीव्रीडने। जुषादयउदात्ता अनुदा
त्तेतआत्मनेभाषाः। ३७ व्रश्चूछेदने। व्यचव्याजीकरणे। उछिउंछे। उछीविवासे। ऋछगतींद्रियप्रल
यमूर्तिभावेषु। मिछउत्क्लेशे। जर्जचर्चझर्झपरिभाषणसंतर्जनयोः। त्वचसंवरणे। ऋचस्तुतौ। उ
ब्जआर्जवे। उज्झउत्सर्गे। लुभविमोहने। रिफकत्थनयुद्धनिंदाहिंसादानेषु। रिहइत्येके। तृपतृंफ
तृप्तौ। शुभशुंभशोभनार्थे। दृभीग्रंथे। चृतीहिंसाग्रंथनयोः। विधविधाने। जुडगतौ। मृडसुखने। पृडच।
पृणप्रीणने। वृणच। मृणहिंसायां। तुणकौटिल्ये। पुणकर्मणिशुभे। मुणप्रतिज्ञाने। कुणशब्दोपकरणयोः। शुनगतौ। द्रुणहिंसागतिकौटिल्येषु। घुणघूर्णभ्रमणे। षुरऐश्वर्यदीप्त्योः। कुरशब्दे। खु

१६

१ णप्रीणने· वृणच· मृणहिंसायां· तुणकौटिल्ये· पुणकर्मणिशुभे· मुणप्रतिज्ञाने· कुणशब्दोपकर १

२ छु वपिकांतावित्येके। तुपतुंपत्रुपत्रुंफ ... हिंसायां। ... प्रथमो ... द्वितीयांतद्वयमेके ... तृफतृंफ हिंसायां। ...

छेदने। मुरसंवेष्टने। क्षुर विलेखने। घुरभीमार्थशब्दयोः। पुर अग्रगमने। वृहवृहतृ उद्यमने। तृहस्तृहतृंहू हिंसार्था। इष इच्छायां। मिषस्पर्धायां। किल श्वैत्यक्रीडनयोः। तिल स्नेहने। चिल वसने। चल विलसने। इल स्वप्रक्षेपणयोः। विल संवरणे। बिल भेदने। णिल गहने। हिल भावकरणे। शिल षिल उंछे। मिल श्लेषणे। लिख अक्षरविन्यासे। कुट कौटिल्ये। पुट संश्लेषणे। कुच संकोचने। गुज शब्दे। गुड रक्षायां। डिप क्षेपे। छुर छेदने। स्फुट विकसने। मुट आक्षेपप्रमर्दनयोः। त्रुट छेदने। तुट कलहकर्मणि। चुट छुट छेदने। जुड बंधने। कड मदे। लुठ संश्लेषणे। कृड घनत्वे। कुड बाल्ये। पुड उत्सर्गे। घुट प्रतिघाते। तुड तोडने। थुड स्थुड संवरणे। स्फुर स्फुल संचलने। उदात्तो [illegible] दात्त आत्मनेपदी। णू स्तवने। धू विधूनने। अथ पूर्वश्चोदात्तः परस्मैपदी। गुगुरी षोत्सर्गे। क्रुग

स्थुड थुड वुड संवरणे। क्रुड भ्रुड निमज्जने। व्रश्चादयउदा

नु

तिस्ठेययोः। अयंयुवश्चानुदात्तौ परस्मैपदिनौ। कुङ् शब्दे॥ वृत॥ उदात्त आत्मनेपदी। पृङ् व्यायामे॥ मृ
ङ् प्राणत्यागे। अनुदात्तावात्मनेभाषौ॥ रिपि गतौ॥ धि धारणे॥ क्षि निवासगत्योः॥ रियत्यादयोनुदात्ताः परस्मै
भाषाः॥ षू प्रेरणे कृ विक्षेपे॥ गृ निगरणे॥ उदात्तौ परस्मैभाषौ॥ दृङ् आदरे॥ धृङ् अवस्थाने॥ अनुदात्ता
वात्मनेभाषौ॥ प्रच्छ ज्ञीप्सायां॥ वृत॥ सृज विसर्गे॥ टुमस्जो शुद्धौ। रुजो भंगे॥ भुजो कौटिल्ये॥ छुप स्प
र्शे॥ रुश रिश हिंसायां॥ लिश गतौ। स्पृश संस्पर्शने॥ विच्छ गतौ॥ विश प्रविशने॥ मृश आमर्शने॥ णुद प्रे
रणे॥ षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु। शद्लृ शातने। पृच्छ [illegible] योनुदात्ता उदात्तेतो वि च्छि [illegible] स्मैभा

घपर

षाः॥ मिल संगमे। [illegible] [illegible]। लिप

स्पार २

१८

संमेसंमेभ्रो उदात्तः स्वरितेदुभयतोभाषः ॥ मुञ्लृ मोक्षणे ॥ लुञ्लृ छेदने ॥ विञ्लृ लाभे ॥ लिप उपदेहे ॥
उपदेहोवृद्धिः ॥ षिच क्षरणे ॥ मुचादयोनुदात्ताः स्वरितेतोविंदतिवर्जमुभयतोभाषाः ॥ कृती छेदने ॥ उ
दात्तउदात्तेत्परस्मैपदी ॥ खिद परिघाते ॥ अनुदात्तउदात्तेत्परस्मैपदी ॥ पिश अवयवे ॥ उदात्तउदात्तेत्पर
स्मैपदी ॥ वृत ॥ ६ ॥ इतिशविकरणास्तुदादयः ॥ रुधिर् आवरणे ॥ भिदिर् विदारणे ॥ छिदिर् द्वैधीकरणे
॥ रिचिर् विरेचने ॥ विचिर् पृथग्भावे ॥ क्षुदिर् संपेषणे ॥ युजिर् योगे ॥ रुधादयोनुदात्ताः स्वरितेत उभयतोभा
षाः ॥ उछृदिर् दीप्तिदेवनयोः ॥ उतृदिर् हिंसानादरयोः ॥ छृदितृदी उदात्तौस्वरितेतावुभयतोभाषौ ॥ कृती
वेष्टने ॥ उदात्तउदात्तेत्परस्मैपदी ॥ जिइन्धी दीप्तौ ॥ उदात्तोनुदात्तेदात्मनेपदी ॥ खिद दैन्ये ॥ विद विचार

ते

१८

णे॥खिद विदी अनुदात्तावनुदात्तेतावात्मनेभाषौ। शिष्लृ विशेषणे॥ पिष्लृ संचूर्णने॥ भंजो आमर्दने॥ भु
ज पालनाभ्यवहारयोः। शिषादयोनुदात्ता उदात्तेतः परस्मैभाषाः॥ तृह हिसि हिंसायां। उंदी क्लेदने। अञ्जू
व्यक्तिम्रक्षणकांतिगतिषु॥ तञ्चू संकोचने॥ ओविजी भयचलनयोः॥ वृजी वर्जने॥ पृची संपर्के॥ तृहादय उदा
त्ता उदात्तेतः परस्मैभाषाः॥ वृत॥ ॥ इति श्नमविकरणा रुधादयः॥ ॥ सप्तमः॥ तनु विस्तारे। षणु दाने।
क्षणु हिंसायां। क्षिणु च। ऋणु गतौ। तृणु अदने। घृणु दीप्तौ। तनादय उदात्ताः स्वरितेत उभयतोभाषाः॥
वनु याचने। मनु अवबोधने। उदात्तावनुदात्तेतावात्मनेभाषौ। डु कृञ् करणे। अनुदात्त उभयतोभाषः॥ इ
त्युविकरणास्तनादयः॥ डुक्रीञ् द्रव्यविनिमये। प्रीञ् तर्पणे कांतौ च। कांतिः कामना। श्रीञ् पाके। मीञ् हिं

१८

सायां। षिञ् बंधने। स्कुञ् आप्रवणे। युञ् बंधने। क्र्यादयो नुदात्ता उभयतो भाषाः। क्नूञ् शब्दे। दूञ् हिं
सायां। पूञ् पवने। लूञ् छेदने। स्तॄञ् आच्छादने॥ कॄञ् हिंसायां। वॄञ् वरणे। धूञ् कंपने। क्र्या
दयञ्ञान्ता उभयतोभाषाः। शॄ हिंसायां। पॄ पालनपूरणयोः। वॄ वरणे। भॄ भर्त्सने। भरणेऽप्येके। मॄ
हिंसायां। दॄ विदारणे। जॄ वयोहानौ। झॄ इत्येके। धॄ इत्यन्ये। नॄ नये। कॄ हिंसायां। ॠ गतौ। गॄ शब्दे। ॠ
णांतिमप्रभृतय उदात्ताः परस्मैभाषाः। ज्या वयोहानौ। री गतिरेषणयोः॥ ली श्लेषणे। व्री वरणे।
प्ली गतौ। वृत्। व्री वरणे। भ्री भये। क्षीष् हिंसायां। ज्ञा अवबोधने। बध बंधने। ज्यादयोनुदात्ताः पर
स्मैभाषाः। वृङ् संभक्तौ। उदात्त आत्मनेपदी। श्रंथ विमोचनप्रतिहर्षयोः॥ मंथ विलोडने॥

३

श्री॰
१८

भरणेऽप्येके

श्रंथ ग्रंथ संदर्भे।क्रथ संश्लेषणे।मृद क्षोदे।मडश्च।गुध रोषे।कुष निष्कर्षे।क्षुभ संचलने।णभ तुभ हिंसायां।क्लिश्ग्र विबाधने।अश भोजने।।उध्रस उंछे।उकार इत्यन्ये यवइत्येके।इष अभीक्ष्ण्ये।विष विप्रयोगे।प्रुष प्लुष स्नेहन सेचन पूरणेषु।पुष पुष्टौ।मुष स्तेये।खच भूत प्रादुर्भावे।खव इत्येके।हेठश्च।श्रंथाद्य उदात्ता उदात्तेतो विषिवर्ज परस्मैभाषाः।ग्रह उपादाने।उदात्तः स्वरितेदुभयतो भषः।इतिश्नाविकरणाः क्र्यादयः।। ।।चुर स्तेये।।चिति स्मृत्यां।यत्रि संकोचने।स्फुडि परिहासे।लक्ष दर्शनांकनयोः।कुद्रि अनृतभाषणे।लड उपसेवायां।मिदि स्नेहने।ओलडि उत्क्षेपणे।जल अपवारणे।पीड अवगाहने।नट अवस्यन्दने।श्रथ प्रयत्ने।वध संयमने।पृ पूरणे।ऊर्ज बलप्राणनयोः।पक्ष परिग्रहे।वर्ण

स्फुटी त्यपि र

लजइत्येके र

वर्ण वर्णन इत्येके १

तुज पिज इत्येके चित्॥ नसि कुडि इत्येके २

१९

पूरण इत्येके २

चूर्णप्रेरणे॑। प्रथप्रख्याने। पृथप्रक्षेपे। पथइत्येके। षंबसंबंधने। शंबंच। भक्षअदने। कुट्टछेदनभर्त्स
नयोः। पुट्टचुट्टअल्पीभावे। अट्टषुट्टअनादरे। लुंठस्ते[illegible]ये॥ शठश्वठअसंस्कारगत्योः। श्वठिइत्ये
के। तुजिपिजिहिंसाबलादाननिकेतनेषु॥ पिसगतौ। षांत्वसामप्रयोगे। श्वल्कवल्कपरिभाषणे
। ष्णिहस्नेहने। स्मिटअनादरे ष्मिङ्अनादरइत्येके। श्लिषश्लेषणे। पथिगतौ पिच्छकुट्टने।
छदिसंवरणे। श्रणदाने। तडआघाते। खडखडिकडिभेदने। कुडिरक्षणे। गुडिवेष्टनेँ। खडिखं
डने। वडिविभाजने। मडिभूषायांहर्षेच। भडिकल्याणे। छर्दवमने। पुस्तबुस्तआदरानादरयोः
॥ नुदसचोदने॥ नक्कधक्कनाशने॥ चक्कचुक्कव्यथने। क्षलशौचकर्मणि॥ तलप्रतिष्ठायां

१९

३ छल इत्येके। कुठि इत्यन्ये। गुठि इत्यपरे ३

[illegible] ॥ तुल उन्माने। दुल उत्क्षेपणे॥ पुल महत्वे। चुल समुच्छ्राये॥ मूल रोहणे॥ कल विलक्षेपे। बिल भेदने॥ तिल स्नेहने॥ चल भृतौ। पाल रक्षणे॥ लूष हिंसायां॥ शुल्व माने॥ शूर्प च॥ चुट छेदने। मुद संचूर्णने॥ पिडि पसि नाशने। वज मार्ग संस्कारगत्योः॥ शुल्क अतिस्पर्शने॥ च पिगल्सां॥ क्षपि क्षान्त्यां॥ क्षजि कृच्छ्रजीवने॥ श्वर्त गत्यां॥ श्वभ्र च॥ ज्ञप मिच्च॥ यम च परिवेषणे॥ चह परिकल्कने॥ रह त्यागे॥ स्वद संवरणे॥ षट्ट स्फिट्ट चुबि हिंसायां॥ पूल संघाते॥ पुंस अभिवर्द्धने॥ टकि बंधने॥ धूस कांतिकरणे। कीट वर्णे। चूर्ण संकोचने॥ पूज पूजायां। अर्क स्तवने॥ शुठ आलस्ये॥ शुठ प्रेरणे॥ जै गर्म आर्ज शब्दार्थौ॥ मर्च च॥ घृष स्रव

बल प्राणने। चित्र्य च पने। घट्ट चलने। मुस्त संघाते। ३

२०

णे॥पचिविस्तारवचने॥तिजनिशाने॥कृतसंशब्दने॥वर्द्धच्छेदनपूरणयोः॥कुबिआच्छादने॥लुबितुबिअर्दने॥अर्दनइत्येके॥ह्रूपव्यक्तायांवाचि॥क्रुपेत्येके॥चुटिच्छेदने॥इलप्रेरणे॥म्रक्षम्लेच्छने॥म्लेच्छअव्यक्तायांवाचि॥ब्रूसबर्हिहिंसायां॥केचिदिह गर्जगर्दशब्दे॥गर्धअभिकांक्षायामितिपठंति॥गुर्दपूर्वनिकेतने॥जसिरक्षणे॥ईडस्तुतौ॥जसुहिंसायां॥पिडसंघाते॥रुषरोषे॥रुटइत्येके॥डिपक्षेपे॥ष्टुपसमुच्छ्राये॥आकुस्मादात्मनेपदिनः॥चितसंचेतने॥दशिदंशने॥दशिदर्शनदंशनयोः॥दसेत्यथैके॥डपडिपसंघाते॥तत्रिकुटुंबधारणे॥मन्त्रिगुप्तपरिभाषणे॥स्पशग्रहणसंश्लेषणयोः॥तर्जभर्त्सतर्ज्जने॥वस्तगंधअ

२०

कुत्स अवक्षेपणे। कुट अवच्छेदने। कुट इत्येके। गलस्रवणे। भाण्ड आभण्डने। २

दने॥ विष्क हिंसायां॥ हिष्क इत्येके॥ निष्क परिमाणे॥ लल ईप्सायां॥ कूण संकोचने॥ तूण पूरणे॥ भ्रूण
आशाविशंकयोः। शठ श्लाघायां॥ यक्ष पूजायां॥ स्यम वितर्के। गूरउद्यमने। शम लक्ष आलोचने। कूट
आप्रदाने। कुट्ट प्रतापने॥ वंचु प्रलंभने। वृष शक्तिबंधने। शक्तिबंधनं प्रजनन सामर्थ्यं शक्तिसंबंधश्च
। मद तृप्तियोगे॥ दिवु परिकूजने। गृ विज्ञाने। विद चेतनाख्यान निवासेषु। मन स्तंभे। युजुगुप्सायां कुस्मना
म्नो वा। चर्च अध्ययने॥ बुक्क भाषणे॥ शब्द उपसर्गादाविष्कारे च। अनुपसर्गाच्च। कण निमीलने।
जंभि नाशने। षूद क्षरणे। जसु ताडने। पश बंधने। अम रोगे। चट स्फुट भेदने। घट संघाते। हंत्यर्थाश्च
। षिम्भ मर्दने। अर्ज प्रयत्ने। धुषिर् विशब्दने। आङः क्रंद सातत्ये। लस शिल्पयोगे। तसि भूष अलं

चुसहने।हलनइस्येकें।चुसेस्येके३

२१

कारोः।अर्हपूजायां।मो[illegible]ने।ज्ञानियोगे।भजविश्राणने।श्रृधुर्गहसने।पतनिकारोपस्कारयोः।र
कलव।आस्वादने।अंचुविशेषणे।लिगिचित्रीकरणे।मुदसंसर्गे।त्रसधारणे।उध्रसउंछे।मुचप्रमो
चने॥मोदनेच।वसस्नेहछेदापहरणेषु।चरसंशये॥भुवोअवकल्कने।कृपेश्च।आस्वदःसकर्मका
त्।ग्रसग्रहणे।पुषधारणे।दलविदारणे।पटपुटलुटतुजिमिजिपिजिलुजिभजिलघ्रसिपिसिकुसि
दशिकुशिघटघटिबृंहबर्हबल्हगुपधूपविच्छचीवपृथल्लोवृल्लोचृणदकृपतर्कवृतुवृधुभाषार्थाः।
रुटलजिअजिदसिभृशिरुशिशीकनटपुटिज्जुचिरघिलघिअहिरहिमहिचालडितअनलव।
पूरीआप्यायने।रुजहिंसायां॥ष्वदआस्वादने।आधृषाद्वा।युजपृचसंयमने।अर्चपूजायां।ष

हि

२१

ह मर्षणे। ईर क्षेपे। ली द्रवीकरणे। वृजी वर्जने। वृञ् आवरणे।। तॄ वयोहानौ। ज्रि च। रिच वियोजनसंपर्चन
योः। शिष अस्मुर्वोपयोगे। तप दाहे। तृप तृप्तौ। वृदी संतापने। चृप छृप तृप दृप संदीपन इत्येके। दृभी भये। दृ
भ संदर्भे। श्रथ मोक्षणे।। मी गतौ।। ग्रंथ बंधने। शीक आमर्षणे। चीक च। अर्द हिंसायां।। हि सि हिंसायां।
अर्ह पूजायां। आङः षद पद्यर्थे। शुंध शौच कर्मणि। छद अपवारणे। जुष परितर्कणे। धूञ् कंपने। प्रीञ्
तर्पणे। श्रंथ ग्रंथ संदर्भे। आप्लु लंभने। तनु श्रद्धोपकरणयोः। उपसर्गाच्च दैर्घ्ये। वद संदेशवचने। वच परि
भाषणे। मान पूजायां। भू प्राप्तावात्मनेपदी। गर्ह विनिंदने।। मार्ग अन्वेषणे। कठि शोके। मृजू शौचालंका
रयोः। मृष तितिक्षायां। धृष प्रसहने। कथ वाक्यप्रबंधे। वर ईप्सायां। गण संख्याने। शठ श्वठ सम्यगवभाषणे। प

२२

टवटग्रंथे। रहत्यागे। स्तनगदी देवशब्दे। पतगतौ वा। पषअनुपसर्गात्। स्वरआक्षेपे। रचप्रतियत्ने। कलगतौ संख्याने च। चहपरिकल्कने। महपूजायां। सारकृपश्रथदौर्बल्ये। स्पृहईप्सायां। भामक्रोधे। सूचपैशुन्ये। खेटभक्षणे। खोटइत्यन्ये। क्षोटक्षेपे। गोमउपलेपने। कुमारक्रीडायां। शीलउपधारणे। साममंत्रप्रयोगे। वेलकालोपदेशे। पल्पूलल्वनपवनयोः। वातसुखसेवनयोः। गवेषमार्गणे। वासउपसेवायां। निवासआच्छादने। भाजपृथक्कर्मणि। सभाजप्रीतिदर्शनयोः। प्रीतिसेवनयोरित्यन्ये। ऊनपरिहाणे। ध्वनशब्दे। कूटपरितापे। कूटपरिदाहइत्यन्ये॥ संकेतग्रामकुणगुणचामंत्रणे। स्तेनचौर्ये। आगर्वादात्मनेपदिनः। पदगतौ। गृहग्रहणे। मृगअन्वेषणे। कुहविस्मापने॥ शूरवीरविक्रांतौ। स्थूलप

न

२२

धेकदर्शने

शिंहरणे। अर्थ उपयाच्ञायां। सत्र संतानक्रियायां। गर्व माने। सूत्र वेष्टने। मूत्र प्रस्रवणे। रूक्ष पारुष्ये। पा
रतीरकर्मसमाप्तौ। पुट संसर्गे। कत्र शैथिल्ये। प्रातिपदिकाद्धात्वर्थे बहुलमिष्ठवच्च॥ तत्करोति तदाच
ष्टे। तेनातिक्रामति। धातुरूपं च। कर्तृकरणाद्धात्वर्थे। वष्क दर्शने। चित्र चित्रकरणे। कदाचिद्दर्शने।
अंस समाघाते। वट विभाजने। लज प्रकाशे। मिश्र संपर्के। संग्राम युद्धे। स्तोम श्लाघायां। छिद्र कर्ण
भेदने। अंध दृष्ट्युपघाते। उपसंहार इत्यन्ये। दंड दंडनिपाते। अंक पदलक्षणे च। अंग च। सुख दुः
खक्रियायां॥ रस आस्वादनस्नेहनयोः। व्यय वित्तसमुत्सर्गे। रूप रूपक्रियायां। छेद द्वैधीकरणे। छद अ
पवारणे। लाभ प्रेरणे। व्रण गात्रविचूर्णने। वर्ण वर्णक्रियाविस्तारगुणवचनेषु। बहुलमेतन्निदर्शनं॥

त

ऌेद् लो द् धौ र्ये पूर्वभावे स्वप्ने च। ले गाद्दि तो। ३

२३

णिङ्॰ अंगानिरसने। श्वेताम्बा श्वतर गालो डिताङ्करकाणामश्वतरेकलोपश्च। पुच्छादिषु धात्वर्थ इत्येव सिद्धम्॥ ॥इति स्वार्थे णिजंताश्चुरादयः॥ ॥कंड्वादिः। कंडूञ् गात्रविघर्षणे। मंतु अपराधे। रोष इत्यके। वल्गु पूजामाधुर्ययोः। अस्तु उपतापे। हृणीङ् लज्जारोषयोः। महीङ् वृद्धिपूजनयोः। वेञ् सत्त्वपरंपरायां। लोडृ उन्मादे(?)। ग्रहणे। धेट लाडिति स्वप्नो चित्ययोः। धैर्ये च तिमन्दूरामत्रं जिह्मे इरस्तद् इरज्य ईर्ष्यायां। कुषुभ क्षेपे। मगध परिवेष्टने। मेधा आशुग्रहणे। पंपदः खे। पंयस तंतस दुःखे। भिषज्चिकित्सायां। भिष्णज उपसेवायां। अरर आरात्कर्मणि। शीघ्र क्रियायामित्येके। समरयुद्धे। सपरपूजायां। इषुधशरधारणे। यक्षकर्मणि। चरणागवरणागतौ। चुरणचौर्ये। भुरण

२३

२ उषस्सप्रतीभावे। वेर धौ र्ये स्वप्ने च वे। ३

धारणपोषणयोः। तुरण त्वरायां। तरण संतरणे। गद्गद् वाक्स्खलने। अगद नैरोग्य कर्मणि। एला केला खेला विलासे। वेला मर्यादायां। लिट् लोट् कृशायां। सुख दुःख तत्क्रियायां। मृग अन्वेषण इत्येके। क्लिदि बाधायां। नमस्कृतायां। दुरस्प रितोपे। दुवस्परिचर्यायां। पूर्वस्मन् इत्येके॥ कंड्वादिः॥ ॥ कंडुम् हवल्गु अस्तु हृणीङ् महीङ् वेञ्लाङ् धेट्लाङ् तिरस्इ रस्। इरजइरयइयस् उरस् उषस् कुसुम् मगधगोधा मेधा पंप भिषग जं अररस् मसेपर इषुधेयज्ञ चरणचुरण भुरण तुरण तरण स्गद् द्वाक् अगद एला केला खेला वेला लेट् लोट् सुख दुःख मृग क्लिश नामद् रस् दुवस् इति कंड्वादिः॥ ॥ इति धातुपाठः समाप्तः॥ ॥ कलियुगनामसंवत्सरे कार्त्तिके सिते पक्षे पंचम्यां बुधवासरे वाराणशी॰

(margin note) लेख्वास्खलने च। क्लिट अल्पीकुसनयोः। लोट जीवने। घृणीङ् रोषणोल्लज्जायां च। महीङ् पूजायां। रखोश्लोघा सदनयोः। दुवस परितापपरिचरणयोः। तिरस् अंतर्धौ। ... गतो। पयस प्रसृतौ। सम्भूयस प्रभूतभावे। अंबर संवर

॥॥ अथः पुस्तकं रामचंद्रपाठ ॥॥

॥ कीपम् धातुपाठपत्र २९ ॥

४००

१५४